हिंदी विश्व

निजी प्रसार हेतु

वर्धा : 23 फरवरी 2015

वर्ष–1 अंक–3 o/kkZ % tuojh&Qjojh 2015 egkRek xka/kh varjjk"Vªh; fganh fo'ofo|ky; dh }ekfld lekpkj if=dk

विश्व का ज्ञान भाषाओं के माध्यम से लोगों तक पहुँचे - कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर

स्थापना–दिवस समारोह

17वें स्थापना दिवस समारोह में कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि विश्वविद्यालय की संकल्पना बहुविषयों को ध्यान में रखकर की गई। विश्वविद्यालय का अहम कार्य विश्व का ज्ञान इतर भाषाओं के द्वारा अपने लोगों तक पहुंचाना होना चाहिए। भाषाओं की आपसी समझ विकसित कर कार्य व्यापार के लिए हमें एक रूप को मानकर अध्यापन करना चाहिए। स्थापना दिवस का मुख्य समारोह आचार्य रामचंद्र शुक्ल सभामंडप में संपन्न हुआ। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. नंदकिशोर आचार्य उपस्थित थे। प्रो. कपिल कपूर ने विश्वविद्यालय के नाम को सार्थक बनाने की दिशा में अपने वक्तव्य से अनेक बातों का उल्लेख किया। उन्होंने गांधी, हिंदी और अंतरराष्ट्रीय आदि शब्दों का विस्तार से जिक्र अपने व्याख्यान में किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में विश्वविद्यालय की व्यापक दृष्टि और विकास के लिए उठाए जाने वाले अहम कदमों का उल्लेख किया। उन्होंने विश्वविद्यालय को व्यापक दृष्टि देने के लिए छात्रों एवं अध्यापकों को एक से अधिक भाषाओं में सक्षम बनाने की बात कहीं। शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण के लिए भाषा क्षमता की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने हिंदी के ज्ञानग्रंथों को दूसरी भाषाओं में अनुवाद करके देशी ज्ञान को अंतरराष्ट्रीय फलक पर पहुंचाने की बात कही। भाषा और राजनीति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा की राजनीति से भाषाओं को बांटा गया है और इससे भाषा विकास में बाधाएं आई हैं। उन्होंने कहा कि भाषाओं में विचार होते है और विचारों का कोई धर्म और जाति नहीं होती हैं। विश्वविद्यालय के व्यापक पाठ्यक्रमों को छात्रों के लिए उपलब्ध करने का संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि हमें 'स्पोकन हिंदी' पर काम करना चाहिए और बोलियों का भी अध्ययन करना चाहिए। विदेशों में हिंदी का बड़ा विस्तार है। इस विस्तार को हमें समेटकर अनुसंधान करना चाहिए। उन्होंने लोक हिंदी साहित्य का केंद्र बनाने की दिशा में कार्य करने की बात भी अपने व्याख्यान में कहीं। मुख्य वक्ता प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि ज्ञान के ऊपर पड़ने वाले दबावों पर खड़ा होना विश्वविद्यालय के लिए एक चुनौती होती है और यह विश्वविद्यालय अपनी संकल्पना और दृष्टि के माध्यम से चुनौती का सामना करते हुए विकास की ओर अग्रसर हो रहा है।

भारतीयों की प्राण भाषा है हिंदी - राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी

कोलकाता केंद्र में आयोजित स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल, बिहार तथा मेघालय के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी भारतीयों की प्राण भाषा है और हिंदी हमारी पहचान है, जो हमारे अभिमान और स्वाभिमान की भाषा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि विश्वविद्यालय हिंदी को विश्व भाषा बनाने में समर्थ होगा। उन्होंने विदेशों में हिंदी से जुड़े अपने कई अनुभव भी सुनाए। इस अवसर पर उन्होंने अपनी चुनिंदा कविताओं का पाठ किया। प्रसिद्ध गायक ओमप्रकाश मिश्र ने राज्यपाल की छह कविताओं की प्रस्तुति की। मिश्र ने केशरीनाथ त्रिपाठी के कुछ दोहे भी गाकर सुनाए। समारोह की अध्यक्षता करते हुए ब्रिटेन से आए वरिष्ठ कवि–कथाकार डॉ. कृष्ण कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय हिंदी को ग्लोबल भाषा बनाने की दिशा में जो काम कर रहा है, वह श्लाघा का विषय है। विशिष्ट अतिथि सूर्यप्रकाश तिवारी ने कहा कि कोलकाता केंद्र डॉ. कृपाशंकर चौबे के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है। इजेडसीसी के निदेशक डॉ. ओम प्रकाश भारती ने कहा कि इजेडसीसी और विश्वविद्यालय मिल कर कई दिशाओं में महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं। मंचासीन अतिथियों का सम्मान प्रो. अमरनाथ, डॉ. चित्रा माली, शंभुदत्त सती, डॉ. अनुजा सुप्रिया, नवनीत पांडेय, विक्रांत दूबे और विनोद सिंह ने किया। संचालन डॉ. कृपाशंकर चौबे ने किया।

विश्वविद्यालय का 'सक्षम' लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में

विश्वविद्यालय के भाषा विद्यापीठ कें अंतर्गत प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र में एसोशिएट प्रोफेसर जगदीप सिंह दांगी का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॅर्ड्स 2015 में दर्ज किया गया है। प्रो. दांगी को यह सम्मान हिंदी के प्रथम वर्तनी परीक्षक सॉफ्टवेयर 'सक्षम' को विकसित करने पर दिया गया। इससे पहले भी इनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॅर्ड्स 2007 में हिंदी के प्रथम इंटरनेट एक्सप्लोरर आई–ब्राउजऱ को विकसित करने पर दर्ज किया जा चुका है। 'सक्षम' यूनिकोड समर्थित ऐसा पहला खास वर्तनी परीक्षक सॉफ्टवेयर है जो यूनिकोड समर्थित एम.एस. विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम आधारित एम.एस. वर्ड के सभी ऑफिस संस्करणों के साथ में लिंक होकर कार्य करने में पूर्ण सक्षम है।

नैक द्वारा विश्वविद्यालय का मूल्यांकन

मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सभी विश्वविद्यालयों के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) द्वारा मूल्यांकन एवं प्रत्यायन अनिवार्य किया गया है। इस दिशा में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा मूल्यांकन की तैयारी कर ली गई है। नैक की पीयर टीम द्वारा 19 फरवरी 2015 को कोलकाता केंद्र एवं 21 फरवरी, 2015 को इलाहाबाद केंद्र तथा 23 से 26 फरवरी 2015 तक विश्वविद्यालय परिसर में निरीक्षण कार्यक्रम निर्धारित है। पीअर टीम में देश के जाने माने विश्वविद्यालयों से जुड़े सात विशेषज्ञ–सदस्य होंगे। कुलपति के दिशा–निर्देशन में पीयर टीम के सहयोग हेतु विविध समितियाँ गठित की गई हैं। इसी आलोक में विश्वविद्यालय में मॉक टीम द्वारा पिछले दिनों तैयारी का जायज़ा लिया गया। विदित हो कि नैक द्वारा विश्वविद्यालय का यह प्रथम मूल्यांकन है।

तेरहवें प्रवासी भारतीय दिवस में विश्वविद्यालय की सहभागिता

गुजरात के गांधीनगर में आयोजित तीन दिवसीय तेरहवें प्रवासी भारतीय दिवस में विश्वविद्यालय के डायस्पोरा अध्ययन विभाग के अध्यापकों डॉ. राजीव रंजन राय, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. उमेश कुमार सिंह, परीक्षा प्रभारी के. के. त्रिपाठी सहित डायस्पोरा अध्ययन, संचार एवं मीडिया अध्ययन, मनोविज्ञान विभाग के 16 शोधार्थियों के दल ने भागीदारी की। शोधार्थियों ने प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय एवं फिक्की के लिए वालंटियर के रूप में कार्य कर इस आयोजन में सक्रिय योगदान दिया। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी सत्याग्रह के सफल प्रयोग के बाद दक्षिण अफ्रीका से 8 जनवरी, 1915 को वापस भारत लौटने के उपलक्ष्य में भारत सरकार के प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन किया जाता है। महात्मा गांधी के भारत वापसी के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में महात्मा गांधी के जीवन पर पेंटिंग्स की प्रदर्शनी के साथ ही भारतीय डायस्पोरा पर लिखी गई पुस्तकों की प्रदर्शनी गांधी गैलरी में लगाई गयी, जिसमें विश्वविद्यालय की 300 से अधिक पुस्तकों का समावेश था। प्रदर्शनी में शोधार्थियों ने डायस्पोरा संबंधी पुस्तकों एवं गांधीजी के जीवन के विविध पक्षों पर प्रवासी भारतीयों को जानकारी दी। उद्घाटन के अवसर पर विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक भारतीय डायस्पोरा के विविध आयाम भेंट की गई। प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने अहमदाबाद में गुजरात विश्वविद्यालय एवं गोपियो के ग्लोबल कांफेरेंस "इंडियन डायस्पोराज कनेक्शन एण्ड पार्टनरशिप विद इंडिया" में भी भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय डायस्पोरा के विविध आयाम पुस्तक का अंतरराष्ट्रीय लोकार्पण न्यूजीलैंड के पूर्व गवर्नर जनरल सर आनंद सत्यानंद, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला के कुलपति प्रो. ए डी एन बाजपेयी, गोपियो के प्रेसीडेंट अशोक रामसरन एवं अन्य गणमान्य अतिथियों के हाथों किया गया।

प्राकृतिक भाषा संसाधन कार्यशाला

मनुष्य की बौद्धिकता और प्रौद्योगिकी में तालमेल आवश्यक - प्रो. कवि नारायण मूर्ति

भाषा को जानने, समझने और प्रौद्योगिकी के माध्यम से विस्तार एवं विकास करने हेतु मनुष्यों की बौद्धिकता और अधुनातन प्रौद्योगिकी में तालमेल आवश्यक है। भारत सरकार के डिज़िटल भारत के स्वप्न को साकार करने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कार्य–संस्कृति को अधिकाधिक बढ़ावा देना चाहिए और इसके केंद्र में सभी भारतीय भाषाओं को रखना चाहिए। उक्त बातें हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा भाषाविज्ञानी प्रो. कवि नारायण मूर्ति ने कही। वे भाषा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आयोजित 'प्राकृतिक भाषा संसाधन कार्यशाला' के उद्घाटन पर बोल रहे थे। अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की। प्रो. मूर्ति ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए हमें भाषाओं को असंख्य लोगों तक पहुँचाना चाहिए। इस चुनौती को अमली जामा पहनाने हेतु कंप्यूटर साक्षरता एक अनिवार्य शर्त है। भारत में करीब 1600 भाषाएं अस्तित्व में हैं, हमारा भविष्य बोली आधारित होगा और इन भाषाओं के अस्तित्व को बचाए रखने हेतु हमें प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना आवश्यक है। स्वागत अधिष्ठाता प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने एवं संचालन आराधना सक्सेना ने किया।

डॉ. मिलिंद पाटिल एवं डॉ. रामगोपाल मीणा को यूजीसी की पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप

अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व पीएच.डी. शोधार्थी डॉ. मिलिंद पाटिल को संगणकीय भाषा विज्ञान विषय के अंतर्गत मशीनी अनुवाद के लिए मशीन वाचक कोश (हिंदी से मराठी) शोध–विषय के लिए एवं डॉ. राम गोपाल मीणा को सांस्कृतिक वर्चस्व और आदिवासी अस्मिता का संकट शोध–विषय हेतु वर्ष 2014–15 की यूजीसी पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप अवार्ड हुई है।

गांधी हमारे प्रतीक - डॉ.चटर्जी

अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा गांधी के शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पश्चिम बंगाल उच्च शिक्षा विभाग के पूर्व सदस्य डॉ. पी. के. चटर्जी ने कहा कि गांधी एक प्रतीक थे। गांधी किसी सिद्धांत के वशीभूत नहीं थे, वह समयानुकूल निर्णय लेकर परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर लेते थे। अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने कहा कि गांधी इस सहस्त्र के सर्वश्रेष्ठ मानव थे, वे निजी विचारों का प्रचार करने की अपेक्षा आचरण पर ध्यान देते थे। गांधी के कथन और कार्य हमेशा हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

कला के बिना समाज अधूरा - प्रो. मनोजकुमार

कला के बिना समाज अधूरा होता है। कलाकार समाज को संपूर्णता प्रदान करते हैं। समाज के हित में कला का उपयोग, प्रयोग, विचार, विस्तार करने की चुनौती कलाकारों ने स्वीकार करनी चाहिए। उक्त प्रतिपादन अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने व्यक्त किए। वे नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित 'मंच आलोकन, वस्त्र विन्यास, रूप रचना तथा नाट्य सामग्री' कार्यशाला के समापन पर मार्गदर्शन कर रहे थे। कार्यशाला का संचालन प्रसिद्ध रंगकर्मी रमेश लखमापुरे ने किया तथा संयोजन डॉ. सतीश पावडे ने किया।

विश्वविद्यालय में चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली लागू

विश्वविद्यालय ने चुनाव आधारित क्रेडिट प्रणाली (Choice Based Credits system) को अपनाने की दिशा में कार्य प्रारंभ कर दिया है। इसका प्रारूप तैयार हो गया है तथा नए अकादमिक सत्र 2015–16 से इस योजना को क्रियान्वित करने का निर्णय लेते हुए विश्वविद्यालय के समस्त विभागों/केंद्रों द्वारा पाठ्यक्रम संबंधी तैयारियां आरंभ कर दी गई हैं।

प्लास्टिक-कचरा मुक्त परिसर

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा कुलपति प्रो. मिश्र के नेतृत्व में विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय विद्यालय परिसर को प्लास्टिक–कचरा मुक्त करने हेतु एक अभियान चलाया गया। जिसमें अध्यापक, कर्मी, स्वयंसेवक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में सहभागी हुए।

सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन

सुरक्षित जीवन के लिए यातायात से संबंधित नियमों का पालन जरूरी है। वाहन चलाते समय गति और भावनाओं पर भी नियंत्रण आवश्यक है। उक्त प्रतिपादन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किया। वे राष्ट्रीय सेवा योजना, जिला पुलिस मुख्यालय, यातायात विभाग, लॉयन्स क्लब गांधी सिटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सड़क सुरक्षा सप्ताह के कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस अवसर पर कुलसचिव संजय गवई, अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. देवराज, जिला पुलिस उप–अधीक्षक आर. जी. किल्लेकर, पुलिस निरीक्षक विलास काले, राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी, डॉ. सुप्रिया पाठक, लॉयन्स क्लब के अनिल एवं विद्या नरेडी, रजनी ढोमणे, अख़्तर कुरेशी, डॉ. मिलिंद पाटिल, यातायात पुलिस विभाग के खडतकर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में यातायात पुलिस निरीक्षक विलास काले ने यातायात संबंधी प्रतीकों को बताते हुए पॉवरप्वॉइंट के माध्यम से अपनी बात रखी। इस उपलक्ष्य में विश्व शांति दिवस की पूर्वसंध्या पर उमेश कुमार सेंगर ने समाज में शांति स्थापित करने हेतु किए जाने वाले प्रयासों की चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी ने किया तथा आभार बी. एस. मिरगे ने माना।

परिवेश और परंपरा से जोड़ती है वॉल मैगज़ीन - प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वॉल मैगज़ीन किसी भी समाज को अपने परिवेश और परंपरा से जोड़ने का काम करती है। इस तरह के रचनात्मक प्रयास शिक्षण संस्थानों में होते रहने चाहिए। उक्त विचार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र की वॉल मैगज़ीन 'अभिव्यक्ति' के लोकार्पण के अवसर पर व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने वॉल मैगज़ीन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि विद्यार्थियों का यह प्रयास उत्साहवर्धक एवं प्रेरणास्पद है। कार्यक्रम में केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय ने विद्यार्थियों के इस प्रयास को बहुत ही सराहनीय कदम बताया। वॉल मैगज़ीन के संपादक डॉ. अख़्तर आलम, रामशंकर, भवानीशंकर, ऋषिता दीवान, पंकज कुमार, अरुण कुमार व केंद्र के शोधार्थी विकास चन्द्र, अमृत कुमार, उमा यादव, अनिल कुमार विश्वा, रणजीत कुमार, बलराम, अफ़सर अली राइनी, धीरेंद्र, अनुपमा तथा एम.फिल.व पी.जी. के अनेक विद्यार्थी इस अवसर पर उपस्थित थे।

स्वास्थ्य मेला एवं रक्तदान शिविर

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रा.से.यो. द्वारा आयोजित स्वास्थ्य मेला एवं रक्तदान शिविर का उद्घाटन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किया। रक्तदान शिविर में डॉ. रवींद्र बोरकर, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी, चिराग निनावे, योगेश भस्मे, अमोल आडे, विवेकानंद राय, अश्विन श्रीवास, विजयकरन, स्नेहल तडस, शैलेंद्र प्रजापति, कृष्ण कुमार यादव आदि ने रक्तदान किया। प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, जिला पुलिस उप–अधीक्षक आर.जी. किल्लेकर, प्रो. देवराज, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी, बी.एस. मिरगे, डॉ. सुप्रिया पाठक उपस्थित थे। मेले में महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉ. दीपक गुप्ता, सुरेंद्र बेलुरकर, तृप्ति थूल, आदि ने शिविर को सफल बनाया।

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी व्याख्यानमाला

भाषा विद्यापीठ में भाषा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आचार्य किशोरीदास वाजपेयी व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रथम व्याख्यान 'व्याकरण में स्त्री' का आयोजन हुआ, जिसके मुख्य वक्ता भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के गणित के पूर्व प्रोफेसर वागीश शुक्ल थे। व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य वक्ता एवं कुलपति का स्वागत करते हुए भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने आचार्य किशोरीदास वाजपेयी द्वारा हिंदी भाषा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय योगदान का संक्षेप में परिचय दिया। प्रो. वागीश शुक्ल ने व्याख्यान आरंभ करते हुए यास्क और पतंजलि द्वारा की गई 'स्त्री' शब्द की व्युत्पत्ति का उल्लेख किया। उन्होंने भाषा और जेंडर को लेकर अनेक विद्वानों के उद्धरणों के आधार पर व्याख्या की तथा कहा कि जेंडर मृग मरीचिका जैसा ज्ञान है। व्याकरण में जहाँ तक अधिकरण कारक है वहाँ तक स्त्री है। बहुब्रीहि के विषय में प्रो. शुक्ल ने कहा कि "मेरा सोचना है कि (शेषो बहुब्रीहि) का अधिकार–क्षेत्र पूरा बचा हुआ समास प्रकरण माना जाए और द्वंद्व भी इसी का भेद माना जाए यानि जब 'चार्थे' हो तो बहुब्रीहि को द्वंद्व कहें"। इसके अलावा प्रो. शुक्ल ने कर्ता और अधिकरण, पतंजलि द्वारा व्याकरण में स्त्री से संबंधित उद्धृत महत्वपूर्ण उद्धरणों को तथा नपुंसक लिंग आदि को विस्तार से व्याख्यायित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि मेरी जानकारी में जेंडर को लेकर इतनी विशद् चर्चा अब तक नहीं हुई है। प्रो.वागीश शुक्ल ने व्याकरण और जेंडर को लेकर अपने ज्ञान से इतने कम समय में हम सभी को इतना अधिक लाभान्वित किया यह वाकई काबिल–ए–तारीफ है। भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने आभार माना।

प्रतिकुलपति द्वारा कोलकाता केंद्र का निरीक्षण

कोलकाता केंद्र के सहयोग से पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा कला संरक्षण पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि सच्चा कलाकार निरर्थकता में सार्थकता को पा लेता है। उन्होंने 12 से 14 जनवरी को कोलकाता केंद्र का निरीक्षण कर विद्यार्थियों से संवाद किया। इस अवसर पर विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी से भी मुलाकात की और उन्हें 90वें जन्मदिवस पर विश्वविद्यालय की ओर से बधाई देते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना की तथा वर्धा आने का निमंत्रण दिया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अध्यक्ष रतनथियाम ने कहा कि वर्तमान समय में भारतीय कला, संस्कृति और धरोहर की रक्षा की बात करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन चुका है। वर्तमान समय में कला और संस्कृति का विकास थम सा गया है। पाश्चात्य रहन–सहन और खान–पान के तौर तरीकों ने हमारी संस्कृति को नष्ट करने का कार्य किया है। जापानी अध्येता कैमरेन स्टीले ने कला, संस्कृति के संरक्षण की जरूरत पर ज़ोर दिया। संचालन पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डा. ओम प्रकाश भारती ने किया तथा आभार केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने माना।

गांधी पुण्यतिथि पर रा.से.यो. की मानव शृंखला रैली

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा गांधी पुण्यतिथि पर बापूकुटी सेवाग्राम आश्रम में मानव शृंखला रैली का आयोजन किया गया। रैली का प्रयोजन मानव बनने की ओर एक कदम था। रैली में विश्वविद्यालय के रा.से.यो. के स्वयंसेवक छात्र–छात्राएं बड़ी संख्या में सहभागी हुए। रैली में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय, रा.से.यो. संयोजक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, कार्यक्रम अधिकारी बी. एस. मिरगे ने संबोधित किया। इस अवसर पर गायिका अनुराधा पौड़वाल ने 'मानव शृंखला रैली' में शामिल होकर अमन मानव मिशन के संकल्प 'मानव बनने की ओर एक कदम' की प्रशंसा की। कार्यक्रम में गायिका अनुराधा पौड़वाल ने गांधी के प्रिय भजनों की प्रस्तुति की। इस दौरान गांधी को मौन श्रद्धांजलि दी गई। आयोजन में वर्धा जिला स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया गया।

वार्षिक खेल महोत्सव में गांधी एकादश टीम रही विजेता

विश्वविद्यालय में आयोजित वार्षिक खेल महोत्सव में क्रिकेट के रोमांचक मुकाबले में गांधी एकादश की टीम ने परिसर विकास एकादश को हराकर जीत हासिल की। मेजर ध्यानचंद क्रीडा स्थल पर क्रिकेट का अंतिम मैच गांधी एकादश और परिसर विकास एकादश के बीच खेला गया। गांधी एकादश टीम का नेतृत्व पंकज पाटिल ने एवं परिसर विकास एकादश का नेतृत्व राजीव पाठक ने किया। गांधी एकादश टीम में कप्तान पंकज पाटिल, विजय यादव, सचिन कुंबलवार, पुष्कर सिंह, भूषण साल्वे, मनोज ठाकुर, अजय प्रताप सिंह, रामप्रसाद कुमरे, वेद प्रकाश, आलोक श्रीवास्तव, वैभव सुशील, वी.पी. सिंह तथा सुधीर ठाकुर का समावेश था। दूसरी ओर सत्यम अधिकारी, राजू पवार, विवेक तडस, अनिकेत गहुकार, अमित गायकवाड, जावेद बेग, नौशाद, अमोल आड़े, गिरीश ठवकर तथा सुधीर शामिल थे। मैच का प्रारंभ प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने किया। गांधी एकादश ने 12 ओवर में ही 96 रन के लक्ष्य को हासिल कर अपनी जीत दर्ज की। कुलपति प्रो. मिश्र ने सचिन कुंबलवार को मॅन ऑफ द मैच का तथा जावेद बेग को मॅन ऑफ द सिरीज़ का खिताब दिया। खेल समिति के अध्यक्ष प्रो. विजय कौल, डॉ. धरवेश कठेरिया, मैनेजर नरेंद्र सिंह, के.के. त्रिपाठी एवं राजेश अरोड़ा उपस्थित थे। कमेंटेटर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, आशीष, प्रकाश एवं रवि तथा अंपायर की भूमिका अविनाश त्रिपाठी और नीरज सिंह ने अदा की।

सहकार में पारदर्शिता जरूरी : प्रो. गिरीश्वर मिश्र

सहकारिता आंदोलन ने आमजन के विकास में अहम भूमिका निभाई है और भविष्य में भी उसकी प्रासंगिकता कम नहीं होगी। उक्त उद्‌गार कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए। वे हिंदी विश्वविद्यालय कर्मचारी सहकारी साख संस्था के दूसरे स्थापना दिवस समारोह में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। प्रो. मिश्र ने पारदर्शिता को सहकारी आंदोलन की सफलता हेतु आवश्यक बताया। विशिष्ट अतिथि प्रतिकुलपति, प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने संस्था को अपने पहले 'अ' श्रेणी प्राप्त लेखा परीक्षण में दी। प्रमुख अतिथि जे.एम. तलमले, सहायक निबंधक, सहकारी संस्था, वर्धा ने संस्था के कामकाज तथा संचालक मंडल द्वारा कम समय में किए गए प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर नज़ीर हाट स्थित सहकारी भंडार का कुलपति द्वारा उद्‌घाटन किया गया। संस्था के सचिव राजेश अरोड़ा ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी तथा संस्था की प्रगति एवं भावी योजनाओं की जानकारी दी। गिरीश चंद्र पांडेय और हेमलता गोडबोले के सहयोग से सहकारी संस्था के हिंदी अंग्रेजी द्विभाषी वेबपृष्ठ को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर कुलपति द्वारा लिंक किया गया। इस अवसर पर कुलपति द्वारा उल्लेखनीय योगदान हेतु सचिन कुंबलवार, मनोज मानापुरे, मनोज ठाकुर, शरद बकाले, रामजस, मनोज टिचकुले, विशाल श्रीनिवास, एस.एम. जगनाड़े तथा सतीश मुरकुटे को प्रशस्ति–पत्र वितरित किए गए। संस्था के संचालक मंडल के आगामी चुनावों से संबंधित चर्चा हुई। संचालन संचालक मंडल के सदस्य, डॉ. रामानुज अस्थाना ने तथा आभार संस्था के अध्यक्ष डॉ. अनिल दुबे ने माना।

साख संस्था का दूसरा स्थापना दिवस

शिक्षा विद्यापीठ में एन.सी.टी.ई. का निरीक्षण

विश्वविद्यालय दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की पहल कर रहा है। इस दिशा में एन.सी.टी.ई. के दल ने 5 फरवरी को नए मानकों के संदर्भ में शिक्षा विभाग का निरीक्षण किया। दल ने विभाग द्वारा की गई तैयारी की सराहना की। मुक्तिबोध भवन में दल का स्वागत शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता अरबिंद कुमार झा ने किया। दल ने समता भवन, प्रशासनिक भवन, भाषा विद्यापीठ, केंद्रीय पुस्तकालय तथा नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग का भी निरीक्षण किया।

21 फरवरी को मातृभाषा दिवस

21 फरवरी को विश्वविद्यालय द्वारा मातृभाषा दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का अयोजन किया गया। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में मातृभाषा को समर्पित विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला के साथ मातृभाषा दिवस का शुभारंभ हुआ, जो वर्ष भर निरंतर चलेगा।

मज़बूत गणतंत्र हमारी शक्ति है - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

66वें गणतंत्र दिवस समारोह में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि मज़बूत गणतंत्र ही हमारे देश की शक्ति है। देश के विकास के लिए हमें और मज़बूती से प्रयास करने चाहिए। विश्वविद्यालय प्रांगण में कुलपति प्रो. मिश्र द्वारा ध्वजारोहण किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के अध्यापक, अधिकारी, कर्मी एवं छात्र–छात्राएं बड़ी संख्या में सहभागी हुए। ध्वजारोहण के पूर्व कुलपति प्रो. मिश्र ने गांधी हिल पर महात्मा गांधी की प्रतिमा को माल्यार्पण कर अभिवादन किया। ध्वजारोहण के पश्चात संबोधित करते हुए कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय हिंदी के विकास के साथ–साथ हिंदी को प्रौद्योगिकी के माध्यम से और प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए कार्य कर रहा है। अनेक परियोजनाएं चल रही हैं जो समाज के शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाती हैं। उन्होंने आह्वान किया कि समाज से अधिकाधिक जुड़ाव के लिए हमें ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए जो विकास के लिए कारगर साबित हो सके। समारोह के बाद हबीब तनवीर सभागार में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर सुविख्यात निर्देशक एटिनबरो द्वारा निर्देशित फिल्म 'गांधी' प्रदर्शित की गई। इस अवसर पर छात्रों ने देशभक्ति पर गीत एवं नृत्य भी प्रस्तुत किए।

समाज विज्ञान में शोध प्रविधि पर कार्यशाला

सभ्यता आगे और संस्कृति पीछे जा रही है - डॉ. विजय धारुरकर

वर्तमान समय में हम विकास की पश्चिम अवधारणा के सिद्धांत को अधिक महत्व दे रहे हैं। इससे हमारी सभ्यता तो आगे जा रही है परंतु संस्कृति पीछे छूटती जा रही है। उक्त कथन डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में लिबरल आर्ट्स विभाग के निदेशक तथा जनसंचार के विशेषज्ञ डॉ. विजय धारुरकर ने प्रतिपादित किए। वे समाज विज्ञान में शोध प्रविधि पर आयोजित कार्यशाला में संचार माध्यम एवं शोध प्रविधि विषय पर बोल रहे थे। डॉ. धारुरकर ने संचार में चार प्रकार के अनुसंधान की बात की। उन्होंने बताया कि माध्यम, समाज, संस्कृति और संदेश केंद्रित अध्ययन के द्वारा हम मीडिया को लेकर अनुसंधान कर सकते हैं। उन्होंने गांवों की तरफ मीडिया की दृष्टि पर कहा कि आज़ादी से पहले गांवों और कस्बों से संबंधित समाचारों को मीडिया में एक प्रतिशत से भी कम जगह मिलती थी, उसे आज पांच प्रतिशत स्थान मिल रहा है। संचार माध्यमों में संख्यात्मक परिवर्तन तो आए हैं परंतु हमें सोचना होगा कि संख्यात्मक वृद्धि को गुणात्मक विकास में कैसे परिवर्तित करें। संचार माध्यमों को ग्लोबलाईज़ेशन पर ही नहीं अपितु ह्यूमनाईज़ेशन पर विशेष बल देना चाहिए।

बाल यौन शोषण पर निरंतर स्वास्थ्य शिक्षा कार्यशाला

दत्ता मेघे आयुर्विज्ञान अभिमत विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कॉलेज के मनोदोष चिकित्सा विभाग एवं विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में निरंतर स्वास्थ्य शिक्षा के अंतर्गत बाल यौन शोषण पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में मनोदोष चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष तथा अनुसंधान एवं विकास के निदेशक डॉ. प्रकाश बेहरे, इंडियन साइकेट्रिक सोसायटी के डॉ. टी.वी. अशोकन, चेन्नई, डॉ. विद्याधर वाटवे, पुणे, डॉ. प्रसाद राव, हैदराबाद, डॉ. जे. एस.एस. राव, संपादक, इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्री, मैसूर, डॉ. युसूफ माचिसवाला, मुंबई, डॉ. जे. दास, असम, डॉ. के.के. मिश्रा, सेवाग्राम, डॉ. सुशील गावंडे, एनकेपी सालवे मेडिकल कॉलेज, नागपुर, वर्धा पुलिस विभाग की प्रतिभा गजभिये ने मार्गदर्शन किया। कार्यशाला में बच्चों को यौन शिक्षा के बारे में अभिभावक और स्कूल के शिक्षकों के द्वारा किस प्रकार के वातावरण की आवश्यकता आदि पर चर्चा की गई।

जिले के सरपंचों के साथ ग्राम विकास वार्ता

नवाचार क्लब एवं नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन का आयोजन

नवाचार क्लब एवं नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन के तत्वावधान में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में वर्धा जिले के सरपंचों के साथ ग्राम विकास के संदर्भ में बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. मनोज कुमार, डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, ग्रामोपयोगी विज्ञान केंद्र, दत्तपुर के डॉ. सोहम पंडया, स्कूल ऑफ स्कॉलर्स की प्राचार्य समिता कार, डॉ. रवि कुमार, जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे, पवनार के सरपंच राजेश्वर गांडोळे, आंजी के जगदीश संचरिया, वायगांव के सरपंच गणेश वांदाडे, प्रमोद झाडे, करंजी काज़ी के सरपंच पद्माकर शंभरकर, इंझापुर के जल आपूर्ति समिति के दीपक तपासे, बोरगांव मेघे पंकज यादव, पेठ के उपसरपंच जगदीश मस्के, बोरगांव सावली के उपसरपंच महेश मोरे, दहेगांव की सरपंच अर्चना कंगाले, उपसरपंच ए.वी. कंगाले, सालोड की सरपंच गीता झाडे, चिकणी जामनी के मारोती कांबले, सिंदी मेघे की सरपंच सुषमा येसनकर, ग्राम विकास अधिकारी सुधाकर आसुटकर, पवनुर के सरपंच रमेश कारनकर, अर्चना वानखेडे, अंजलि चौधरी, जयश्री चौधरी, रामनगर की मंदा वानखेडे, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र की शोधार्थी अनुपमा कुमारी आदि प्रमुखता से उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रो. मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय में ऐसी अनेक योजनाएं है जो गावों के विकास के लिए कारगर दिशा प्रदान कर सकती हैं, जिससे वर्धा के आसपास का समाज हमसे जुड़ा रहे और हम भी उनके विकास के लिए प्रतिबद्ध हो सके। भविष्य में व्यापक तौर पर हम लोगों को जोड़ने का अभियान जारी रखेंगे। कार्यक्रम के दौरान सरपंचों तथा समुदाय के प्रतिनिधियों ने विकास संबंधी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं। डॉ. सोहम पंडया ने गांवों में कम लागत पर शौचालय, सड़कें आदि बनाने के लिए केंद्र की विभिन्न योजनाओं का जिक्र किया। प्रो. मनोज कुमार ने समाज कार्य विभाग की ओर से गांवों को गोद लेकर वहाँ के विकास के लिए अपनी योजनाएं बताईं। संचालन रवि कुमार ने किया एवं आभार बी.एस. मिरगे ने माना।

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के शोधार्थियों द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित मासिक समाचार पत्र

वालीबॉल में परिसर विकास की टीम रही विजेता

विश्वविद्यालय के वार्षिक खेल महोत्सव में वालीबॉल के रोमांचक मुकाबले में परिसर विकास की टीम ने विजय हासिल की। वालीबॉल प्रतियोगिता प्रथमा भवन के प्रांगण में संपन्न हुई। परिसर विकास की टीम का नेतृत्व प्रवीण झाडे ने किया।

सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ द्वारा गांवों का विकास

विश्वविद्यालय में सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ विकसित किया जा रहा है, जिसके तहत शिक्षा विभाग, मनोविज्ञान विभाग, मानव विज्ञान विभाग, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग, स्त्री अध्ययन विभाग, फ्यूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र तथा संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र पांच गांवों में साक्षरता, स्वास्थ्य, सफाई, ग्रामोद्योग बाल–विकास और रोज़गार के क्षेत्रों में कार्य करके गांवों का विकास करेंगे एवं उन्हें आदर्श गांव बनाएंगे।

सावित्रीबाई फुले के शैक्षणिक कार्य दुनिया के लिए मिसाल हैं - डॉ. दिलीप चव्हाण

सावित्रीबाई फुले जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड में अंग्रेज़ी विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. दिलीप चव्हाण ने कहा कि सावित्रीबाई फुले के शैक्षणिक कार्य दुनिया के लिए एक मिसाल है। बतौर एक शिक्षिका सावित्रीबाई एक ऐसी शिक्षा सुधारक थी जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में तत्कालीन समाज से लोहा लेकर महिलाओं की शिक्षा की दिशा में कार्य किया। हबीब तनवीर सभागार में संपन्न कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की। प्रारंभ में सावित्रीबाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम में वर्धा पुलिस विभाग में विभागीय समन्वयक प्रतिभा गजभिये, सावित्रीबाई फुले महिला छात्रावास की अधीक्षक अवंतिका शुक्ला मंचासीन थे। प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि महाराष्ट्र सुधारकों की भूमि है। उन सुधारकों को याद कर हमें उनके कार्यों को चरितार्थ करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे जो सोचते हैं वह करें और दूसरों को करने के लिए प्रेरित भी करें। प्रतिभा गजभिये ने कानूनों का ज़िक्र करते हुए उनके प्रति विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। समारोह में छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जिसमें भारती देवी, चित्रलेखा अंशू, उपासना, किरण कुंभरे, विजयलक्ष्मी आदि ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी। स्वागत अवंतिका शुक्ला ने किया। शोधार्थी नाज़िया आलम तथा सहयोगी छात्राओं ने 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम...' गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विद्यार्थी, कर्मी तथा वर्धा के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सावित्रीबाई फुले जयंती

यायावर ऋषि थे डॉ. कौसल्यायन -प्रो. चित्तरंजन मिश्र

डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन निरंतर चलने वाले यात्री थे। दस वर्ष तक वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने हिंदी की सेवा की। वे यायावर ऋषि थे। उक्त कथन प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने व्यक्त किए। वे डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन स्मृति व्याख्यान में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारुण्यकरा ने की। व्याख्यान में डॉ. कौसल्यायन के सहयोगी तथा केंद्र के संस्थापक निदेशक डॉ.एम.एल.कासारे व कवि भोला सरवर उपस्थित थे। प्रो. मिश्र ने कहा कि यह व्याख्यानमाला हर वर्ष जारी रहेगी ताकि डॉ. कौसल्यायन के विचारों के बीज बचे रहें और आने वाली पीढ़ी को उसका लाभ प्राप्त होता रहे। डॉ. एम. एल. कासारे ने डॉ. कौसल्यायन के बौद्ध धम्म और हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान को याद करते हुए उनके जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। भोला सरवर ने कविताओं के माध्यम से अपनी बात रखी। प्रो. कारुण्यकरा ने केंद्र द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों का ज़िक्र करते हुए डॉ. कौसल्यायन के विचारों के प्रचार–प्रसार में केंद्र की भूमिका अधोरेखित की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने किया तथा आभार शुभांगी शंभरकर ने माना।

डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन स्मृति व्याख्यान

व्यक्ति के पर्सनल स्पेस में बढ़ रहा मीडिया का हस्तक्षेप - प्रो. आनंद प्रकाश

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विशेषकर टेलीविजन व्यक्ति के मनोविज्ञान को उभारने के कारण आज लोगों की ज़रूरतें बढ़ती चली जा रही हैं। यथार्थ तक लोग आज विज्ञापन के माध्यम से पहुँचना चाहते हैं। मीडिया, विज्ञापन एवं अन्य माध्यमों द्वारा सामाजिक यथार्थ की मध्यस्थता कर रहा है। उक्त विचार दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रो. आनंद प्रकाश ने विगत दिनों संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र एवं मनोविज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित परिचर्चा में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज के दौर के मीडिया ने व्यक्ति के मनोविज्ञान में बदलाव लाने का काम किया है। मीडिया ने हमारी सोच, व्यवहार व रिश्तों को बदला है। व्यक्ति के यथार्थ को दिखाने के नज़रिए में मीडिया बदलाव ला रहा है। कुलपति एवं प्रख्यात मनोवैज्ञानिक प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि मीडिया व्यक्ति को दर्शक बना रहा है। फलस्वरूप व्यक्ति उदासीन होता जा रहा है। मीडिया हमारे जीवन को सूक्ष्म रूप से प्रभावित कर रहा है। प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने सामाजिक मूल्यों पर ज़ोर देते हुए कहा कि ज़्यादातर मूल्य इससे बनते हैं कि एक सजग व्यक्ति के तौर पर हमें क्या नहीं करना चाहिए, जबकि वर्तमान मीडिया हमें यह बताता है कि क्या करना चाहिए। बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र ने कहा कि प्रत्येक माध्यम की अपनी एक विशेषता होती है तथा हर माध्यम अपनी विशेषताओं और सीमाओं के अंदर कार्य करता है। केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय 'अंकित' ने कहा कि वर्तमान में मीडिया शब्द आते ही सबसे पहले जो छवि मानस पटल पर उभरती है, वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की होती है। आज मीडिया के अन्य माध्यमों की स्मृति इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बाद होती है, जबकि मीडिया के अन्य माध्यमों का समाज में अपना विशिष्ट योगदान होता है। आज वैकल्पिक मीडिया भी समाज में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। परिचर्चा में प्रो. अरबिंद कुमार झा, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. अख़्तर आलम, डॉ. राकेश मिश्र, अनामी शरण बबल सहित शोधार्थी व विद्यार्थी शामिल हुए।

मीडिया और मनोविज्ञान का अंतर्संबंध विषय पर परिचर्चा

गुजरात के कलाकारों का सिद्धि धमाल नृत्य

विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस के अवसर पर जूनागढ़, गुजरात के कलाकारों ने पारंपरिक सिद्धि धमाल नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थितों का मन मोह लिया। कलाकारों में साजिद सिदी, आशिक सिदी, अब्दुल सिदिक सिरी, फारुख़, वसीम सिदी, अल्लाररखा सिदी, मुख्तियार सिदी, तोसिफ सिदी, अयूब सिदी, इमरान सिदी, मोहसिन सिदी, शाहरुख़ सिदी, सिराज सिदी आदि शामिल थे। इन कलाकारों ने पारंपरिक पोशाक में वाद्ययंत्रों के साथ नृत्य कर उपस्थितों को मुग्ध किया।

विश्वविद्यालय की विकास यात्रा में हम सब साथ है...

विश्वविद्यालय में 'मंथन' के अंतर्गत वक्ताओं ने दिया भरोसा

17वें स्थापना दिवस के अवसर पर पिछले 17 वर्ष की उपलब्धियां और विश्वविद्यालय के विकास के लिए आने वाले वर्षों में प्रगति की दिशा सुनिश्चित करने के प्रयोजन से 'मंथन : स्वप्न और यथार्थ' कार्यक्रम कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। मंथन में प्रो. मनोज कुमार, गोरखपुर विश्वविद्यालय में विज्ञान विभाग के प्रो. महेश्वर मिश्र, पं. शंकरप्रसाद अग्निहोत्री, विश्वविद्यालय के पूर्व विशेष कर्त्तव्य अधिकारी डॉ. हेमचंद्र वैद्य, प्रदीप दाते, लॉ. अनिल नरेडी, डॉ. भरत महोदय आदि ने विश्वविद्यालय के बहुमुखी विकास की सराहना करते हुए आगे का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कार्यक्रम में प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र तथा साहित्यकार प्रो. सरजू प्रसाद मिश्र विशेष रूप में उपस्थित रहे। पं. शंकरप्रसाद अग्निहोत्री ने कहा कि गांधी के कथन 'वर्धा भारत का नाभि केंद्र है' के अनुसार विश्वविद्यालय वर्धा में स्थापित होना पूरे भारत के लिए गौरव की बात है। कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि विचारों के प्रजातंत्र की उपस्थिति ही विश्वविद्यालय की केंद्रीय भूमिका में है। उन्होंने आह्वान किया कि क्षमता और साधनों का भरपूर उपयोग कर लगन और निष्ठा के साथ विश्वविद्यालय के लिए समर्पित कार्य करना चाहिए। 'मंथन' में जो विचार सामने आए हैं उन पर अमल करने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने पूर्व तीनों कुलपतियों का उल्लेख कर उनके द्वारा संघर्ष और कठिन काल में किए गए कार्यों की सराहना की। प्रास्ताविक प्रो. अनिल कुमार राय ने किया, भूमिका बी. एस. मिरगे ने रखी, संचालन डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया तथा आभार प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने माना।

समाज विज्ञान में शोध प्रविधि कार्यशाला का समापन

शोध के माध्यम से नई सोच विकसित हो और परिवर्तन की नई दिशा मिल सके। समाज विज्ञान में होने वाले शोध का लाभ समाज के कल्याण लिए होना चाहिए। उक्त विचार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तत्वावधान में 10 से 19 जनवरी तक समाज विज्ञान में शोध प्रविधि पर आयोजित कार्यशाला के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। मुख्य अतिथि कुलपति, एमसीआई के अकादमिक समिति के अध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश मिश्र उपस्थित थे। मुंबई विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विभाग के प्रो. पी.जी. जोगदंड, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र तथा प्रो. मनोज कुमार मंचासीन थे। कार्यशाला में 13 राज्यों के 20 विश्वविद्यालयों के शोधार्थी उपस्थित हुए। विश्वविद्यालय के विविध विभागों के शोधार्थियों ने कार्यशाला में सहभागिता की। प्रतिभागियों को कुलपति प्रो. मिश्र, प्रो. वेद प्रकाश मिश्र तथा प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र के द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। प्रास्ताविक में प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि ज्ञान एक अनवरत प्रक्रिया है, शोध प्रविधि जैसी कार्यशाला के माध्यम से विवेक जागरण का काम किया जाता है। डॉ. शंभू जोशी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा संचालन डॉ. मिथिलेश ने किया।

केंद्रीय विद्यालय परिसर में श्रमदान व स्वच्छता अभियान

निर्माणाधीन केंद्रीय विद्यालय के परिसर में विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैम्पस में आयोजित अभियान में शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मी, स्वयंसेवकों, छात्र–छात्राएं एवं सुरक्षा कर्मियों ने चिन्हित भूमि पर श्रमदान एवं स्वच्छता अभियान चलाया गया। अभियान में प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. के. के. सिंह, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, राजेश अरोड़ा, राजेंद्र घोडमारे, तुषार वानखेडे आदि सहित सिवनी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. श्रीनिवास मिश्र, डॉ. सुप्रिया पाठक, बी. एस. मिरगे शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि हाल ही में विश्वविद्यालय को केंद्रीय विद्यालय स्थापित करने की अनुमति मिलते ही उक्त अभियान को सर्वप्रथम गांधी पुण्यतिथि पर कुलसचिव संजय गवई के निर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा चलाया गया।

मलेशिया की अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. हुनगुंद का शोधपत्र प्रस्तुत

भाषा विद्यापीठ के भाषा प्रौद्योगिकी विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. एच. ए. हुनगुंद मलेशिया के केबांगसन विश्वविद्यालय में भाषा शिक्षण पर 4 एवं 5 फरवरी को आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागी हुए। उन्होंने 'भारत में द्वितीय भाषा में शिक्षण एवं अध्यापन की समस्याएं और उसका समाधान' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। अपने शोधपत्र में डॉ. हुनगुंद ने भारतीय भाषा का परिदृश्य और उनके अध्ययन एवं अध्यापन के संदर्भ में आनेवाली समस्याओं का ज़िक्र करते हुए इसके समाधान की दिशा में सुझाव प्रस्तुत किए।

संग्रहालय में 'सरस्वती'

स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय में साहित्यकारों के पत्र, पांडुलिपि एवं पत्रिकाओं का अभूतपूर्व संकलन है। इसी शृंखला में कुछ और भी दुर्लभ सामग्री संकलित है। केंद्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद के पुस्तकालय से सरस्वती पत्रिका की छायाप्रति मंगाकर रखी गई है। बाबू श्यामसुंदर दास तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित सरस्वती पत्रिका के दुर्लभ अंक हैं, जिनका प्रकाशन वर्ष 1900, 1901 तथा 1903 हैं। संग्रहालय का प्रयास है कि आचार्य द्विवेदी द्वारा संपादित सरस्वती के सभी उपलब्ध अंक संग्रहालय में संरक्षित हों जिससे अध्येता लाभान्वित हो सकें। यह भी प्रयास है कि पूरी पत्रिका को 'मंगलवार पोस्ट' (ई–बुलेटिन) के माध्यम से संग्रहालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया जा सके। उल्लेखनीय है कि जयशंकर प्रसाद द्वारा 1914 में प्रकाशित 'प्रेम–पथिक' का प्रथम संस्करण संग्रहालय में है, जो वेबसाइट पर उपलब्ध है।

प्रो. तुलसीराम को श्रद्धांजलि

प्रख्यात लेखक एवं विचारक तथा विश्वविद्यालय की विद्या–परिषद् के सदस्य प्रो. तुलसीराम के आकस्मिक निधन पर 13 फरवरी, 2015 को उनकी स्मृति में शोक सभा रखी गई। विश्वविद्यालय परिवार ने उनके साहित्यिक योगदान को याद किया तथा उनके परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत को श्रद्धांजलि दी।

प्रिंट मीडिया में पत्रकारिता के मूल गुण - अशोक मिश्र

'बहुवचन' के संपादक अशोक मिश्र ने संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र में हिकी गज़ट के स्मरण दिवस पर भारत में मुद्रित पत्रकारिता का उदय विषय पर आयोजित परिचर्चा में कहा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भले ही त्वरित गति से जनता के बीच संदेश पहुँचाकर अपना प्रभाव बना लेती है लेकिन प्रिंट मीडिया में पत्रकारिता के मूल गुण विद्यमान हैं। जेम्स आगस्टस हिकी ने समाज को अभिव्यक्ति के एक मंच को उपलब्ध कराने की पहल की। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. अनिल राय ने मुद्रित माध्यमों की स्वतंत्रता प्राप्ति में योगदान का ज़िक्र कर पत्रकारिता के स्वरूपों में दिनोदिन हो रहे परिवर्तन से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अख़्तर आलम ने किया तथा आभार शोधार्थी रामशंकर ने माना।

राष्ट्रपति भवन में केंद्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सम्मेलन

4 एवं 5 फरवरी, 2015 को राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी की अध्यक्षता एवं मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी की उपस्थिति में केंद्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन के दौरान लिया गया सामूहिक छायाचित्र।

स्थापना दिवस पर अहिंदी भाषियों को हिंदी सेवी सम्मान

विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर अहिंदी भाषी क्षेत्र से हिंदी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को हर वर्ष दिया जाने वाला 'हिंदी सेवी सम्मान' इस वर्ष वरिष्ठ हिंदी–मराठी साहित्यकार डॉ. दामोदर खडसे, अनुवादक एवं संवाद लेखिका डॉ. सुलभा कोरे, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चंद्रदेव कवडे, सोलापुर विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. गिरीश काशिद, लोहिया अध्ययन केंद्र, नागपुर के संस्थापक श्री हरीश अडयालकर तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रचार अधिकारी श्री नरेंद्र दंढारे को कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा 17वें स्थापना दिवस पर प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप शॉल, स्मृतिचिन्ह एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गए।

समारोह में वर्धा के पूर्व सांसद विजय मुडे को विश्वविद्यालय के विकास में अहम योगदान के लिए सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी ने किया। इस अवसर पर 2013 में हिंदी सेवी सम्मान प्राप्त प्रा. राजेंद्र मुंढे, हिंदी सेवी सम्मान समिति के सदस्य प्रदीप दाते, डॉ. सतीश पावडे, बी.एस. मिरगे, लॉयन्स क्लब की रंजना दाते, समाजसेवी अनिल नरेडी, अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

स्थापना दिवस पर इलाहाबाद केंद्र में गोष्ठी

'अंधेरे में' हिंदी कविता में विलक्षण शुरूआत – प्रो. गोपेश्वर सिंह

मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' जगत समीक्षा है। यह बेचैन कर देने वाली कविता है। हिंदी कविता में इससे एक विलक्षण शुरूआत होती है। मुक्तिबोध के समय स्याह और सफ़ेद का माहौल काफी साफ था। शीतयुद्ध के समय परिवर्तनगामी शक्तियों की पहचान की जा सकती थी, आज का दौर वैसा नहीं है। परम अभिव्यक्ति के खतरे आज और ज़्यादा हैं। उक्त बातें विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद में 'मुक्तिबोध और हिंदी कविता के पचास बरस' विषय पर आयोजित गोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहीं। केंद्र के प्रभारी प्रो. संतोष भदौरिया ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि विश्वविद्यालय ने अपनी अल्पावधि में अनेक उपलब्धियां हासिल की है। ज्ञान और हिंदी भाषा को विस्तारित किया है। इलाहाबाद केंद्र में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की

अगुवाई में नए पाठ्यक्रमों एवं शोध कार्य के साथ भोजपुरी–हिंदी–अंग्रेज़ी शब्दकोश परियोजना की शुरूआत हुई है। अध्यक्षीय वक्तव्य में आलोचक दूधनाथ सिंह ने कहा कि मुक्तिबोध संघर्ष में मुक्ति का रास्ता देखते हैं। उनके पूर्व ऐसी कविता लिखने की कोई परंपरा दिखाई नहीं देती है। विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेंद्र कुमार ने कहा कि मुक्तिबोध आत्मसंघर्ष के कवि हैं। हिंदी आलोचना को सर्वाधिक पारिभाषिक शब्द मुक्तिबोध ने दिए। समकालीन जनमत के संपादक रामजी राय ने कहा कि मुक्तिबोध अविभाजित व्यक्तित्व के कवि नहीं हैं। आत्मसंघर्ष से उनकी कविता उपजती है। स्वागत डॉ. विधु खरे दास, डॉ. सपना सिंह, डॉ. अनुपमा राय ने किया। इलाहाबाद केंद्र में आयोजित गोष्ठी में बड़ी संख्या में लेखक, सुधीजन एवं विद्यार्थियों की भागीदारी रही।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 25 वें सम्मेलन में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र को साहित्यिक योगदान हेतु सम्मानित किया। साथ में सांसद रामदास तडस, विधायक डॉ. पंकज भोयर, अनंतराम त्रिपाठी एवं बनवारीलाल पुरोहित।

हिंदी विश्व : पाठक दृष्टि

हिंदी विश्व का पिछला अंक गागर में सागर समेटे हुए है। पत्रिका में सहज, सरल और गम्य हिंदी का प्रयोग काबिले तारीफ है। छपाई और सज़ावट आकर्षक और गरिमापूर्ण है।

– सी.एस. बेसेकर, सहायक निदेशक
आकाशवाणी, नागपुर।

विश्वविद्यालय : वेबसाइट एवं ब्लॉग

www.hindivishwa.org
www.hindisamay.com
www.mediasamay.com
www.blogsamay.com
www.archive.hindivishwa.org
www.hindipremi.blogspot.com
www.nirvachan.blogspot.com
www.ccmswardha.wordpress.com
www.ullaasmgahv.blogspot.in
www.dswmgahv.blogspot.com
www.diasporamgahv.webs.com

संरक्षक
प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति
सलाहकार
प्रो. चित्तरंजन मिश्र, प्रतिकुलपति
प्रधान संपादक
प्रो. अनिल के. राय 'अंकित'
संपादक मंडल
डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी
बी. एस. मिरगे
डॉ. अवंतिका शुक्ला
ऋषभ मिश्र
राजेश अरोड़ा
आकल्पन
राजेश आगरकर
प्रकाशक
कुलसचिव की ओर से
राजेश कुमार यादव, प्रकाशन प्रभारी द्वारा
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा – 442 005 (महाराष्ट्र) भारत